राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

मारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में0 शुभकामनाएँ।

हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि उसने अपनी कृपा से हमें एक और दिन प्रदान किया। आरंभ करते समय, मैं आपको पवित्रशास्त्र की एक गहरी सच्चाई पर मेरे साथ मनन करने के लिए आमंत्रित करता हूँ—कलीसिया में आत्मिक एकता की भूमिका, जो संसार के लिए एक सशक्त गवाही है।

आज सुसमाचार द्वारा खोए हुओं तक पहुँचना कठिन क्यों हो गया है?

जब हम “बाहर वालों” की बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य उन लोगों से है जो या तो सांसारिक हैं या अन्य धर्मों के अनुयायी हैं। आज के समय में सुसमाचार प्रचार पहले से अधिक कठिन होता जा रहा है—पर क्यों?

यह सत्य है कि “प्रभु अपने लोगों को जानता है” (2 तीमुथियुस 2:19), लेकिन यह सत्य महान आदेश की उपेक्षा करने का बहाना नहीं बन सकता (मत्ती 28:19–20)। वास्तविक समस्या कलीसिया के भीतर है—हम आत्मिक एकता में चलने में असफल रहे हैं।

एकता की गवाही – सुसमाचार प्रचार की कुंजी

राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से ठीक पहले यीशु ने यह गहन प्रार्थना की:

यूहन्ना 17:21–23
“कि वे सब एक हों; जैसे हे पिता, तू मुझ में है, और मैं तुझ
में हूँ; वैसे ही वे भी हम में एक हों, ताकि संसार विश्वास
करे कि तू ने मुझे भेजा है।
और जो महिमा तू ने मुझे दी है, वह मैं ने उन्हें दी है, कि वे
एक हों, जैसे हम एक हैं।
मैं उनमें और तू मुझ में, कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और
संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा है, और जैसा तू ने मुझ से
प्रेम किया, वैसा ही उनसे भी प्रेम किया है।”

इस पद में यीशु प्रकट करते हैं कि संसार के सामने सुसमाचार की विश्वसनीयता सीधे तौर पर विश्वासियों की एकता से जुड़ी हुई है। जब मसीही आत्मा द्वारा संचालित एकता में चलते हैं, तब यह इस सत्य की पुष्टि करता है कि यीशु पिता द्वारा भेजे गए परमेश्वर के पुत्र हैं।

हर प्रकार की एकता परमेश्वर से नहीं होती

यीशु किसी सतही या संस्थागत एकता की बात नहीं कर रहे थे—जैसे

राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

संप्रदायों के गठबंधन या अंतर-धार्मिक समझौते। वे आत्मिक एकता के लिए प्रार्थना कर रहे थे—जो पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न होती है।

इफिसियों 4:3–6
“मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।
एक ही देह है, और एक ही आत्मा—जैसे तुम्हें बुलाए जाने से
एक ही आशा है;
एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा;
एक ही परमेश्वर और सब का पिता, जो सब के ऊपर, और सब के द्वारा,
और सब में है।”

यह “आत्मा की एकता” सिद्धांत में आधारित और आत्मा द्वारा समर्थित होती है। यह केवल भावनात्मक या संगठनात्मक नहीं, बल्कि सत्य और प्रेम में एकता है—जो मसीह के व्यक्तित्व और कार्य पर आधारित है।

सच्ची आत्मिक एकता के मूल तत्व

1. एक प्रभु – यीशु मसीह

न कोई भविष्यवक्ता, न कोई संत, न कोई धार्मिक संस्थापक—बल्कि

राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

पुनरुत्थित प्रभु (प्रेरितों के काम 4:12)। वही कोने का पत्थर हैं (इफिसियों 2:20)।

2. एक विश्वास – मसीह-केंद्रित सुसमाचार

यह विश्वास पवित्रशास्त्र पर आधारित है, न कि मानवीय परंपराओं पर (यहूदा 1:3; 2 तीमुथियुस 3:16–17)।

3. एक बपतिस्मा – यीशु मसीह के नाम में

प्रारंभिक कलीसिया ने यीशु के नाम में डुबकी द्वारा बपतिस्मा का अभ्यास किया (प्रेरितों के काम 2:38; 8:16; 10:48; 19:5)। यह त्रिएक परमेश्वर के सिद्धांत (मत्ती 28:19) का खंडन नहीं है, बल्कि यह घोषित करता है कि उद्धार उसी प्रकट नाम—यीशु—के द्वारा आता है (प्रेरितों के काम 4:12)।

4. एक आत्मा – पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा हर विश्वासी में वास करता है, हमें एक देह में एक करता है (1 कुरिन्थियों 12:13), और हमें फल लाने की सामर्थ देता है (गलातियों 5:22–23)।

जब कलीसिया एक होती है, मसीह प्रकट होता है

राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

जब कलीसिया इन सच्चाइयों के अनुसार स्वयं को संरेखित करती है और उन्हें जीवन में प्रकट करती है, तब संसार के लिए हमारी गवाही शक्तिशाली और प्रभावशाली बन जाती है—केवल शब्दों में नहीं, बल्कि जीवन और प्रेम में।

यीशु ने कहा:

यूहन्ना 13:35
“यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि
तुम मेरे चेले हो।”

विभाजन विरोधाभासी संदेश भेजता है। जब विश्वासी संप्रदायों, सिद्धांतों और व्यक्तिगत स्वार्थों से विभाजित होते हैं, तब संसार की दृष्टि में सुसमाचार धुंधला पड़ जाता है।

आत्म-परीक्षा का आह्वान

इसलिए हमें स्वयं से पूछना चाहिए:
क्या वह एकता, जिसके लिए यीशु ने प्रार्थना की थी, आज हम में विद्यमान है?

राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

यदि नहीं, तो हमें स्वीकार करना होगा कि कुछ टूट गया है। और जो टूटा है, उसे पुनः स्थापित किया जाना चाहिए—केवल हमारे लिए नहीं, बल्कि जातियों के बीच सुसमाचार के लिए।

यह केवल एक व्यक्तिगत लक्ष्य नहीं है; यह एक ईश्वरीय आदेश है।

यूहन्ना 17:23
“मैं उनमें और तू मुझ में, कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा है…”

हमारी एकता के द्वारा मसीह का प्रचार

आइए, पवित्र आत्मा की सहायता से, बाइबिल आधारित एकता की ओर लौटें—सिद्धांत में, आत्मा में और प्रेम में। जब हम ऐसा करेंगे, तब हमें मसीह के विषय में लोगों को समझाने के लिए अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ेगा।
हमारी एकता स्वयं ही राष्ट्रों के लिए मसीह का प्रचार करेगी।

शालोम।
आओ, प्रभु यीशु!

राष्ट्र के साथ मसीह को साझा करने का एक सरल तरीका

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp